प्रथम अध्याय

धूमिल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का सामान्य परिचय

"धूमिल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का सामान्य परिचय"

१.१ प्रस्तावना :-

आधुनिक हिन्दी साहित्य में कवि धूमिल साठोत्तरी पीढ़ी के उन कवियों में हैं, जिनकी कविता अपनी आन्तरिक सच्चाई और उस में उपलब्ध नाटकीय वक्तव्यों के कारण महत्त्व रखती है। धूमिल के जीवन-काल में "संसद से सड़क तक" काव्य-संग्रह प्रकाशित हुआ। सातवे दशक के इस बहुचर्चित काव्य-संग्रह ने सभी आलोचकों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लिया। इस काव्य-संग्रह में पच्चीस कविताएँ संग्रहित हैं। धूमिल ने अपने तीखे व्यंग्य द्वारा समाज के हर उस आदमी पर लेखनी चलाई है जो समाज का प्रतीक है। सुदामाप्रसाद पाण्डेय धूमिल की कविताओं का स्वर व्यंग्यात्मक है। उनकी कविताओं में उपलब्ध हुआ आवेश आक्रामक रूप धारण कर लेता है। उनकी - कविताओं में निराशा आत्महीनता एवं पराजय का भाव अनेक स्थानों पर दिखायी देता है। वास्तव में देखा जाये तो हर क्षण परिस्थितियों से संघर्ष करते रहने के कारण ही यह स्वर उनकी कविताओं में निहित है। उनके काव्य में व्यंग्य का लक्ष्य कोई व्यक्ति - विशेष नहीं है। धूमिल कोई व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए कविता की ओर प्रवृत्त नहीं होते थे बल्कि विसंगतियों से उत्पन्न समस्याओं का बोध कराने के लिए वह काव्य लिखते रहे।

धूमिल के काव्य में राजनीतिक व्यवस्था तथा राजनेताओं पर करारा व्यंग्य है। राजनीतिक व्यवस्था के प्रति धूमिल का व्यंग्य अत्यंत कटु है। उन्हें लगता है कि भ्रष्टाचार ने ही टोपियों और कुर्सियों का रूप धारण कर लिया है। साथ ही धूमिल ने समाज, भाषा, नौकर पेशा लोग आदि अनेक विषयों को अपनी कविताओं के द्वारा पाठकों के सामने रखने का प्रयास किया है।

१.२ जीवन परिचय :-

१.२.१ जन्म -

धूमिल का जन्म ९ नवम्बर, १९३६ ई. में दोपहर के समय वाराणसी के खेवली नामक ग्राम में पं. शिवनायक पाण्डेय के घर एक सामान्य कृषक परिवार में हुआ। धूमिल का नाम "सुदामा प्रसाद पाण्डेय" है। पिता शिवनायक पाण्डेय किसी दूकान में नौकरी कर अपनी गृहस्थी को संभालते थे। धूमिल का जन्म अत्यंत गरीब परिवार में हुआ था। बचपन में धूमिल को सभी सुदामा के नाम से बुलाया करते थे। धीरे-धीरे जैसे वे बड़े होते गये और पहलवानी में शौक रखने लगे, लोग उन्हें "सिकिया पहलवान" के नाम से पहचानने लगे। उसके पश्चात उन्होंने खुद का नामकरन "धूमिल" किया। इस नाम से ही अब वे पहचाने जाते हैं।

१.२.२ माता-पिता -

धूमिल के पिता का नाम शिवनायक पाण्डेय था, जो अत्यंत कठिनाईयों में अपने दिनों को बिता रहे थे। वे किसी दूकान में नौकरी करते थे, उनके बारे में डॉ. चमनलाल गुप्ता लिखते हैं - "शिवनायक पाण्डेय का 'सुथनी साहु की दूकान' से सम्बन्ध था संभवत: यह - जयशंकर प्रसादजी के यहाँ मुनीम रहे थे।"[१] अपने जीवन के अंतिम दिनों में उन्होंने इस नौकरी को भी छोड़ दिया और अपने चारों भाईयों सहित कृषि-कर्म में ही लग गये। धूमिल इस बड़े परिवार के जेष्ठ पुत्र थे और उनके साथ उनके चार

---

१. डॉ. चमनलाल गुप्ता - सुदामा पाण्डेय धूमिल की कविता में यथार्थ-बोध - पृष्ठ १० ।

भाई भी रहते थे। पिता के मृत्यु के पश्चात धूमिल ने इस संयुक्त परिवार को एक बनाये रखने के लिए हर प्रकार की कठिनाईयों को सहा। धूमिल की माता का नाम रजवंतीदेवी था। वह धार्मिक विचारों की महिला थी। पिता उदार तथा क्रोधी स्वभाव के थे, पिता का यह गुण धूमिल में भी पाया जाता है। स्नेहमयी माता के होते हुये भी धूमिल का लालन-पालन विधवा चाची प्रभावती ने किया।

१.२.३ बचपन -

धूमिल का बचपन खेवली में ही गुज़रा जहाँ धूमिल सिकिया पहलवान के नाम से प्रसिध्द थे। बचपन से ही उन्हें अखाड़े का शौक था। इसी-लिए तो आगे साहित्यिक अखाड़ों में भी उन्होंने अपने कलम के जरिये बड़े-बड़े साहित्यकारों को नतमस्तक कर दिया। धूमिल बचपन से ही जाती-पाती के विरोधी, अन्ध-विश्वासों से टकरानेवाले साहसी एवं जिद्दी थे। धूमिल जब केवल बारह वर्ष के थे तभी उनके पिताजी का देहान्त हो गया इस घटनाने तो धूमिल का बचपना छीन लिया, और उन्हें और अधिक जिम्मेदार बनाया। धूमिल के सामने अब सिर्फ एक ही पर्याय बचा था किसी शहर में जाकर नोकरी ढूँढ़ने का। उनकी इसी व्यथा का चित्रण डॉ. ग.तु. अष्टेकरजी इस प्रकार करते हैं - "ऐसी स्थितिवाले परिवार के होनहारों के सामने बस एक ही विकल्प होता है - शहर में अपनी किस्मत आजमाने चले जाने का।" [१] धूमिल को भी यही करना पड़ा और जवानी के वह उमंगभरे दिन धूमिल ने किसी कारखाने में लोहा ढोते और किसी कंपनी में एक जगह से दूसरी जगह घूमने में बिताये।

१] डॉ. ग.तु. अष्टेकर - कठघरे का कवि "धूमिल" - पृष्ठ १८।

१.२.४ शिक्षा -

धूमिल ने शिक्षा का प्रारंभ स्वयं के गाँव में ही किया। १९५३ ई. में हायस्कूल की परीक्षा में उत्तीर्ण होनेवालों में अपने गाँव के प्रथम व्यक्ति धूमिल ही थे। इसके पश्चात विज्ञान से इण्टरमीडिएट करने के लिए उनका नामांकन "हरिश्चंद्र इण्टर कॉलिज" वाराणासी में किया गया। पारिवारिक समस्याओं के कारण उनका उच्च शिक्षा प्राप्ति का स्वप्न अधूरा रह गया। धूमिलने अपने प्रतिभा द्वारा हिन्दी और अंग्रेजी का ज्ञान अर्जित किया लेकिन उनकी उच्च शिक्षाकी लालसा अन्त तक बनी रही।

१.२.५ अर्थोपार्जन -

जब धूमिल बारह वर्ष के थे तभी उनके पिता का देहान्त हो गया। पितामह, पिता और चाचा की मृत्यु से न केवल परिवार का आर्थिक ढाँचा बिगड़ गया बल्कि धूमिल पर आर्थिक बोझ बढ़ता गया। इसी व्यथा को डॉ. चमनलाल गुप्ता ने लिखा है - "ग्यारह वर्ष की अवस्था में मित्र बनारसीलाल श्रीवास्तव के साथ वरुणा के तट पर बैठकर कविता की जुगलबन्दी करनेवाला किशोर - एकाएक जीवन के नग्न यथार्थ से जा टकराया और उसे अजीविका की तलाश में निकलना पड़ा।" [१]
धूमिल अपनी शिक्षा अधूरी छोड़ कर अर्थोपार्जन के लिए निकल पड़े और गाँव-गाँव, शहर-शहर भटकते रहे। राजशेखरजी भी धूमिल के गाँव से निकल पड़ने के बारे में कुछ इस प्रकार लिखते हैं - "आसपास के तमाम लोगों के विरोध और उपहास के बाद भी अकेले दम सादे चार बीघे जंगल को काटकर, उसे उपजाऊ खेत की शक्ल में बदल देनेवाले गौरी पाण्डेय के वंश

१] डॉ. चमनलाल गुप्ता - सुदामा पाण्डेय धूमिल की कविता में यथार्थ-बोध - पृष्ठ १०।

का होनहार बिरवान धूमिल, स्नेहमयी विधवा माँ, मातृवत्सला चाची, चार छोटे भाईयों और पत्नी को रोता-कलपता छोड़कर रोटी की तलाश में कलकत्ता चला गया। " [१]

१.२.६ नौकरी -

धूमिल के मौसेरे भाई ने धूमिल को नौकरी के लिए कलकत्ता बुलाया लेकिन उनसे धूमिल को ज्यादा सहयोग न मिल सका। उसी गाँव के निवासी घीसन यादव नामक मित्र के साथ धूमिल किसी कारखाने में लोहा ढोने का काम करने लगे। जब उनके और एक सहपाठी तारकानाथ को इस बात का पता चला कि धूमिल आजीविका के लिये मजदूरी कर रहे हैं तो वह मित्र धूमिल को अपने घर ले आया, और अपने बहनोई के प्रयत्नों से धूमिल को "मेसर्स तलवार ब्रदर्ज प्राइवेट लिमिटेड" कंपनी में पासिंग ऑफिसर की नौकरी दिलवायी। चूंकि यह कंपनी लकड़ी का क्रय-विक्रय करती थी, धूमिल को इसी दौरान हिमालय की तराई से लेकर असम तक के जंगलों में घूमना पड़ा। इस दौरान मजदूरों पर किये जानेवाले अन्याय को धूमिल ने अपनी आँखों से देखा। राजशेखरजी इस बारे में लिखते हैं - "मजदूरों के साथ धन-पशुओं के घृणित व्यवहार को देखकर उसने यह महसूस किया कि पिरामिड़ों के शिखरों का संपूर्ण शिलालेख गुलाम मजदूरों ने अपने आंसूओं और अपने खून से लिखा है। " [२] ऐसे मालिकों की धूमिल ने कभी पर्वाह नहीं की। कुछ ही दिनों में धूमिल को नौकरी छोड़कर वाराणसी वापस आना पड़ा।

१] राजशेखर - "कल सुनना मुझे" की भूमिका - पृष्ठ १२।

२] - वही - - पृष्ठ १३।

कलकत्ता की नौकरी छोड़ने के पश्चात धूमिल ने जनवरी, १९५७ ई. में "आई.टी.आई." वाराणसी में ॲड्मिशन ले लिया। १९५८ ई. में विद्युत डिप्लोमा प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान प्राप्त कर उत्तीर्ण किया। यहीं पर १९५८ ई. में विद्युत अनुदेशक के पद पर उनकी नियुक्ति हुई। अपने कार्य कुशल होने पर भी धूमिल का तबादला बार-बार होता रहा। अन्तमें उनका तबादला "औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान" सीतापुर में कर दिया गया। इस तबादले से धूमिल बहुत दुःखी हुये और नौकरी में लंबे अर्से तक की रजा की अर्जी देकर स्वतंत्र साहित्य सेवा की बात सोचने लगे।

१.२.७ विवाह -

धूमिल के पिता की मृत्यु के ग्यारह मास पश्चात लालपुर, वाराणसी निवासी पं. नान्हक दीक्षित की पुत्री मूरतदेवी के साथ धूमिल का विवाह संपन्न हुआ। उस काल की सामाजिक तथा धार्मिक परिस्थिति के अनुसार धूमिल का विवाह ठीक ही कहा जायेगा, क्योंकि उस काल में इसी आयु में विवाह होते थे और उनका घर धार्मिकता के बारे में रुढ़ी-परम्पराओं को लेकर चलनेवाला था। धूमिल को एक पुत्र प्राप्त हुआ, जिसका नाम रत्नशंकर है।

१.२.८ मृत्यु -

१९७४ ई. में. नौकरी में दी हुयी लंबे अर्से तक की रजा की अर्जी अंतिम साबीत हुई, उन दिनों उनके सर का भयंकर दर्द फिर उभर आया। "सर सुन्दरलाल अस्पताल" - में डॉ. कटियार ने उनका परिक्षण किया और उन्हें ब्रेन-ट्युमर हो जाने की सूचना दी। नवम्बर, १९७४ ई. को

धूमिल को लखनऊ ले जाया गया। ऑपरेशन के पश्चात १० फरवरी, १९७५ ई. में उनकी मृत्यु हो गयी। राजशेखरजी ने धूमिल की मृत्यु का मार्मिक चित्रण करते हुये लिखा है - "लखनऊ के सारे मित्रों ने खून-पसीना एक कर दिया। डॉक्टर की जी तोड़ कोशिशों के बावजूद १० फरवरी, १९७५ ई. को रात नौ बजकर पचास मिनट पर धूमिल ने अपने मजबूत ढाँचे को बेड नं. २ पर हमेशा के लिए छोड़ दिया।"[१] परिवार के सिर से धूमिल की मजबूत बाहों का साया उठ गया, धूमिल ही के शब्दों में -

"एक समूचा और सही वाक्य
टूटकर
'बिखर' गया है।"[२]

१.३ व्यक्तित्व की विशेषताएँ :-

१.३.१ स्वाभिमानी -

धूमिल ने अपने जीवन में हर तरह की कठिनाइयों का सामना किया, लेकिन बचपन से लेकर मृत्यु तक उन्होंने कभी अपने स्वाभिमान को ठेस नहीं लाने दी। तभी तो कलकत्ते में लोहा ढोने से लेकर जंगलो में भटकने तक की नौकरी करते रहे लेकिन अपने आप को कभी गिराहुआ नहीं समझा। जब धन-पशुओं के घृणीत व्यवहार को अपनी आँखों से देखा और जाना कि अब इनकी और हमारी नहीं जमेगी तब खुद इस्तेफा देकर वाराणासी चले आये। धूमिल की बिमारी के दौरान जब उन्हें उन के अफसर मी. तलवार ने

१] राजशेखर - "कल सुनना मुझे" की भूमिका - पृष्ठ २०।
२] धूमिल - "संसद से सडक तक" [पटकथा] - पृष्ठ १०९, ११०।

कहा - "I am paying for my work not for your health, तो प्रतिउत्तर में धूमिल ने हाथौड़े की तरह चोट करते हुये कहा - But I am working for my health not for your work." [1]

इसके पश्चात नौकरी को लाथ मारकर धूमिल वारणासी चले गये। स्वाभिमान व्यक्तिगत इमानदारी का एक अंश होता है, धूमिल इस मामले में बहुत आगे जा चूके थे तभी तो नौकरी करते समय भी उनमें लाचारी का एक अंश भी नहीं था।

१.३.२ गरीब लोगों के लिए लड़नेवाले धूमिल -

धूमिल चाहे नौकरी करते रहे हो या गाँव में रहे हो उन्होंने हमेशा गरीब लोगों के प्रति हमदर्दी दिखायी। धूमिल ने समाज के सर्वहारा वर्ग को नजदीक से देखा था। समाज के धनी गरीब लोगों को किस तरह लूटते हैं यह धूमिल जानते थे। राजशेखरजी अपना अनुभव व्यक्त करते हुये लिखते हैं - "जब हमने धूमिल के बारे में गाँव के मल्लाह से पुछा तो वह रोने लगा और बोला भाइया भगवान हम इन पर गजब गिरा देहलन। अब हम गरीबन के देवता कोई नहीं हउवै। " [२] धूमिल की कविता न केवल अभिव्यक्ति थी बल्कि धूमिल ने जो कुछ लिखा था वह अनुभूति के बल पर लिखा। बचपन से ही धूमिल ने गरीबी को न केवल देखा था बल्कि उसे सहा था। डॉ. चमनलाल गुप्ता उन के बारे में लिखते हैं -

---

१.] राजशेखर - "कल सुनना मुझे" की भूमिका - पृष्ठ १४।

२] - वही - - पृष्ठ २।

"धूमिल के मन में शोषित, दलित जनता के प्रति सहज सहानुभूति थी इसीलिए उनके काव्य में वामपंथी तेवर देखने मिले परन्तु मानव मात्रा में आस्था का बिन्दु उन्हें अधिक उदार तथा संवेदनाशील बनाता है, इसिलिए वे अपने लोगों से घृणा नहीं कर सके।"[१] गरीब लोगों के प्रति हमदर्दी रखनेवाले धूमिल ने अपने काव्य में भी हमेशा गरीबों का ही साथ दिया।

१.३.३ साहसी -

साहस धूमिल में बचपन से ही था। बचपन में बड़े-बड़े पहलवानों को आसमान दिखानेवाले धूमिल की अपनी छोटीसी ज़िंदगी शेर की तरह थी। राजशेखरजी के शब्दों में कहा जाये तो - "धूमिल चाची और माँ की आखों में बाघ था। वस्तुत: सफेदपोश अपराधियों और अत्याचारियों के लिए वह एक क्रुध्द बाघ था। खेवली से आई.टी.आई. की लंबी दूरी, पट्टीदारों के अठठारह बीस जाली मुकदमों का संत्रास, लंका, अस्सी, गोदौलिया से लेकर नवाबगंज तक की बैठकों में बारह-एक बजे रात तक मानसिक तनाव झेलते हुए साहित्यिक हथकंडेबाजों से जूझना और फिर रातभर जागकर कविता लिखना अकेले सागर-मन्थन से कम नहीं।"[२]

धूमिल ने कविता लिखते समय किसी की पर्वाह नहीं की जो उन्होंने देखा सो अपने तीखे व्यंग्य से प्रकट किया। उन्होंने अपने सामने खडे हर आदमी को सही परखा और किसी से बिना संकोच उस पर लिखा। चाहे वह बड़े से बड़ा राजनेता हो या फिर सामान्य जन हो। उनमें वह साहस और विश्वास था जिस के बल पर वह डंके की चोट पर कुछ भी कहने तैय्यार हो जाते थे। यही उनकी स्वभावगत विशेषता आज उन्हें समकालीन कवियों में सर्वश्रेष्ठ साबीत करती है।

१] डॉ. चमनलाल गुप्ता - "सुदामा पाण्डेय धूमिल के काव्य में यथार्थबोध" - पृष्ठ १४।

२] राजशेखर - "कल सुनना मुझे" की भूमिका - पृष्ठ ४।

१.३.४ निर्णयक्षम -

धूमिल में निर्णय की बहुत बड़ी क्षमता थी। जो भी निर्णय लेते थे वह बहुत ही सोच-समझकर और सब को चौंकानेवाला होता था। जब धूमिल पढ़ रहे थे तब उनके पिता की मृत्यु हुयी। उन्हें इस बात का पता चला कि अब पढ़ना मुश्किल है, किसी भी प्रकार से अर्थोपार्जन करना जरूरी है तो फौरन उन्होंने पढ़ाई बंद कर दी, कलकत्ता चले गये, और नौकरी में लग गये। जब नौकरी में मालिक और उनकी नहीं बनी तो फिर वापस वारणासी चले आये।

जहाँ उनकी निर्णय-क्षमता घर छोड़कर कलकत्ता जाने, मजदूरी करने, नौकरी छोड़ने, आई. टी. आई. में अधिकार के लिए लड़ने तथा भ्रष्ट अधिकारियों का विरोध करने में दिखायी पड़ी वहाँ पर कविता में भी उनकी - निर्णयक्षमता दिखायी पड़ती है। डॉ. चमनलाल गुप्ताने इसी बात को उठाते हुये लिखा है - "उनके काव्य में जो उतावलापन, तीखापन, कड़वाहट, अथवा आक्रोश है वह शुध्द मानवीय - संवेदनाओं की उपज है।" [१] इसी निर्णयक्षमता के सहारे उन्होंने थोड़ीमात्रा में ही सही अपने लिये सफलता अर्जित की।

१.३.५ स्पष्टवादी -

धूमिल अत्यंत भावुक, स्पष्ट-वक्ता एवं स्वाभिमानी व्यक्ति थे। अपनी कविताओं में उन्हें विश्वास था और वे अपनी उपेक्षा सह नहीं पाते थे। इसी-लिए तो वे अपने समकालीन कवियों के बारे में कहने में जरा भी

१] डॉ. चमनलाल गुप्ता - सुदामा पाण्डेय धूमिल के काव्य में यथार्थ-बोध - पृष्ठ १५।

नहीं हिचकिचाते थे। धूमिल की स्पष्टवादी भूमिकाने उन्हें हमेशा खतरे में डाले रखा। उनके स्वतंत्र विचारों और बेलाग-बातों से परेशान और क्रुध्द अधिकारी बार-बार उनका तबादला करते रहे।

जीवनभर स्पष्टवादी रहे धूमिल ने अपनी कविता में भी की गई बात को परदे में नहीं रखा। उनके सीधे-साधे शब्द सामनेवाले का पूरा "पोस्टमार्टम" करवाने के लिए काफी होते हैं। तभी तो आज धूमिल पर तीखी आलोचना करनेवाले आलोचक भी यह मानते हैं कि अगर समकालीन परिस्थिति किस प्रकार की है, जानना हो तो धूमिल की कविता पढ़नी चाहिए।

अंत में निशकर्षत: हम यही कह सकते हैं कि धूमिल के व्यक्तित्व के इतने पहलू हैं कि उसे किसी एक नाम से जाना नहीं जा सकता। उनका विद्रोही स्वभाव ही उन्हें अपने मंज़िल तक पहुँचा सका। उनका व्यक्तित्व ही उनकी कविताओं को आकार देता है। उनके व्यक्तित्व में जितनी भी चीजें थी वही उनके कविताओं में हमे दिखायी देतीं हैं। उनका काव्य उनके व्यक्तित्व की ही एक पहचान है कहा जाये तो गलत न होगा।

१.४ कृतित्व :-

धूमिल जब सातवी कक्षा में थे तभी से तुकबन्दियाँ करने लगे थे। पहले कुछ दिन उनका झुकाव और कवियों की तरह गीतों में रहा। उन दिनों उन्होंने गीत, बिरहा, दोहा, शेर आदि के अतिरिक्त कई कहानियाँ एवं निबंध भी लिखे। प्रकाशित रूप में सब से पहले उनकी कहानी "फिर भी वह जिन्दा है" मिलती है जो कि जून, १९६० के "साकी" नामक पत्रिका में प्रकाशित हुयी।

इसके पश्चात कोमलकांत पदावली में गीतों का प्रकाशन होता रहा। "बासुंरी जल गई" काव्यसंग्रह की सूचना मात्र मिलती है, परंतु यह काव्यसंग्रह और उसके गीत मिलते नहीं। १९६३ के आस-पास धूमिल की रचनाएँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में छपने लगी। धूमिल ने "शीशेपर लोटती रोशनी" काव्य-संगह की योजना बनाई किन्तु उसमें सफलता न मिल सकी।

आज तक धूमिल के तीन काव्य-संग्रह प्रकाशित हुऐ -

[१] संसद से सड़क तक [१९७२]

[२] कल सुनना मुझे [१९७७]

[३] सुदामा पाण्डेय का प्रजातंत्र [१९८४]

१.४.१ संसद से सड़क तक -

१९७२ में धूमिल का प्रथम काव्य-संग्रह "संसद से सड़क तक" प्रकाशित हुआ। इस काव्य-संग्रह में २५ कविताएँ हैं। १९६६ से १९७० तक की लिखी गई कविताओं को इस में शामिल किया गया है। इस कृति में बौध्दिकता, वैचारिकता और यथार्थ का समावेश है। प्रस्तुत काव्य-संग्रह के बारे में राहुल लिखते हैं - "प्रकाशन्तर से हम यह कह सकते हैं कि "संसद से सड़क तक" यथार्थवादी अन्तर्द्वंद्व का अजायब घर है।" [१]

धूमिल ने "संसद से सड़क तक" में अपने आवेश पूर्ण शैली में व्यवस्था के विरोध में सूक्ष्म और सार्थक अभिव्यक्ति की है। धूमिल की कविता राजनिति और समाज से सम्बन्ध रखती है। इस काव्य-संग्रह की प्रत्येक कविता राजनीतिक चेतना से परिपूर्ण है।

१] राहुल - "विपक्ष का कवि: धूमिल" - पृष्ठ २८।

आजादी के पश्चात देश की दरिद्रता, भ्रष्टाचार, राजनीतिक अस्थिरता, अनुशासनहीनता, चरित्रहीन नेताओं का उदय, देश के विभिन्न प्रांतों में उत्पन्न हुयी विभिन्न समस्यायें धूमिल के इस काव्य-संग्रह में दिखायी देतीं हैं। धूमिल ने ऐसे मूलभूत समस्याओं की ओर पाठकों का ध्यान आकृष्ट किया है जिससे आज का मानव समाज हर क्षण जूझ रहा है। फिर चाहे वह बे-रोजगारी की समस्या हो या चाहे गरीबी की हो। धूमिल की कविता आम आदमी की हालत तलाशती है। इस कविता-संग्रह द्वारा धूमिल हमे यह समझाना चाहते हैं कि व्यवस्था में बुनियादी तौर पर बदलाव आना चाहिए। इसी-लिए तो वह एक नये प्रजातंत्र को अपनाने की बात करते हैं।

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि वर्तमान - भारतीय राजनीति के प्रति उनका कोई विश्वास नहीं था। उसकी जगह वे नए एवं स्वस्थ समाज की कल्पना करते थे। और वर्तमान व्यवस्था में बदलाव लाना चाहते थे। इस तरह धूमिल का प्रथम काव्य-संग्रह "संसद से सड़क तक" वर्तमान राजनीतिक-सामाजिक रवैये को दिखाता है।

१.४.२ कल सुनना मुझे -

"संसद से सड़क तक" के पश्चात "कल सुनना मुझे" धूमिल का दूसरा काव्य-संग्रह १९७७ में प्रकाशित हुआ। इसमें ३७ कविताएँ हैं। इस काव्य-संग्रह का नाम कन्हैयाजी ने "दस्तक" रखा था पर बाद में विद्यानिवास मिश्रजी ने इसे "कल सुनना मुझे" रखा।

धूमिल के मरनोपरान्त प्रकाशित इस काव्य-संग्रह की अधिकांश कविताएँ जनता से जुड़ी हुयी हैं। ये कविताएँ वर्तमान शोषक व्यवस्था का पर्दाफाश करती हैं। इस काव्य-संग्रह की अधिकांश कविताएँ परस्पर प्रेम और भाईचारे को ढूँढ़ती हमे दिखायी देतीं हैं।

"कल सुनना मुझे" की प्रमुख कविताएँ -

[१] आस्था -

प्रस्तुत कविता में कवि के मन में नेहरू की मृत्यु के उपरांत छाये अंधकार का चित्रण है।

[२] दस्तक -

यह कविता पाठकों के सामने आशावादी स्वर लेकर आती है।

[३] देश-प्रेम : मेरे लिये -

प्रस्तुत कविता में कवि स्पष्ट करता है कि देश के लिये उसका प्रेम सहज है। देश-प्रेम उसके लिए दिखाने की वस्तु नहीं। कवि को लगता है अब लोग देश-प्रेम की आड़ में शोषन कर रहे हैं। सत्ता में बैठे लोग अपने लोगों का हर खून माफ करने तैयार हैं। नेताओं का भ्रष्ट और नंगापन स्पष्ट हो गया है। बड़े-बड़े लोग भी अब छोटे महसूस होने लगे है।

[४] प्रजातंत्र के विरुद्ध -

प्रस्तुत कविता में कवि धूमिल प्रजातंत्र की हत्या का संकेत देते हैं।

[५] कविता श्री काकुलम -

प्रस्तुत कविता आपातकाल की भयावह स्थितियों का अंकन करती है।

[६] आतिश के अनार सी वह लड़की -

प्रस्तुत संग्रह की यह एक सशक्त रचना है। जिस में रोशनआरा बेगम के अत्मबलिदान की कहानी भारतीय नारी की प्रेरणा बन सके, यही कवि चाहते हैं।

अन्य कविताएँ भी उपर्युक्त कविताओं का ही प्रतिनिधित्व करती हैं।

धूमिल की दृष्टि वर्तमान व्यवस्था पर टिकी हुयी थी। जहाँ एक ओर भाईचारा, परस्पर प्रेम और सद्भावनाओं का ह्रास हुआ तो दूसरी ओर स्वार्थ की वृध्दि हुयी है। इस कविता-संग्रह के बारे में डॉ. वी. कृष्ण लिखते हैं - "प्रस्तुत संग्रह में कवि धूमिल पूंजीवादी - व्यवस्था के अमानवीय मूल्यों के प्रति संघर्ष करते हुये अपनी कविता के प्रगतिशील चेतना द्वारा मानवीय मूल्यों को तलाशते हैं। " [१]

प्रस्तुत कविता-संग्रह की सभी कविताएँ आम आदमी के प्रति प्रेम तथा श्रध्दा रखती हैं तो पूंजीवादीयों के खिलाफ अपना गहरा रोष प्रकट करती हैं।

१.४.३ सुदामा पाण्डेय का प्रजातंत्र -

सन १९८४ में धूमिल के जेष्ठ पुत्र रत्नशंकर के प्रयत्नों से यह काव्य-संग्रह पाठकों के सामने आया। इसमें ६० कविताएँ हैं। इस काव्य-संग्रह की भूमिका में धूमिल के पूत्र रत्नशंकर ने कहा है - "मरणोपरान्त

१] डॉ. वी. कृष्ण - "क्रांतिदर्शी कवि धूमिल" - पृष्ठ २३।

मेरी - माताजी श्रीमती मूरत के आर्थिक सहयोग से "कल सुनना मुझे" का प्रकाशन हुआ फिर पारिवारिक कलह के कारण एक लंबे अर्से तक कोयी संग्रह प्रकाश में न आ सका। " [१]

"सुदामा पाण्डेय का प्रजातंत्र" की प्रमुख कविताएँ -

सुदामा पाण्डेय का प्रजातंत्र-२ - प्रस्तुत कविता में कवि अपने देश की प्रजातांत्रिक व्यवस्था से पूरी तरह से उबा हुआ दिखायी देता है। प्रजातंत्र के नाम पर किस प्रकार इस देश के लोगों का शोषण किया जा रहा है इस का चित्रण इस कविता में है।

[१] कोडवर्ड -

प्रस्तुत कविता में संसद और संविधान के नाम पर सत्ताधारी पक्ष द्वारा आम आदमी के शोषण की कहानी लिखी गई है।

[२] संयुक्त मोर्चा -

प्रस्तुत कविता में कवि जनता के साथ मिल कर व्यवस्था के भेडियों को सबक सिखाना चाहते हैं।

[३] कर्फ्यू में एक घंटे की छूट -

प्रस्तुत कविता में कवि प्रजातंत्र की रक्षा के नाम पर होनेवाली हिंसा का चित्रण करते हैं।

१] रत्नशंकर - "सुदामा पाण्डेय का प्रजातंत्र" [दो शब्द] - पृष्ठ १।

[४] मेमन सिंह -

प्रस्तुत कविता एक सशक्त रचना है। जोकि शरणार्थी समस्या पर लिखी गई है।

[५] मुक्ति का रास्ता -

प्रस्तुत कविता में जनता के बढ़ते आक्रोश का चित्रण हुआ है।

[६] मतदाता -

प्रस्तुत कविता में आम आदमी में वोट के ताकत के प्रति सजगता का चित्रण हुआ है।

[७] सिलसिला -

प्रस्तुत कविता में धूमिल आम आदमी को अपना सहयोग देने कहते हैं।

इस काव्य-संग्रह की अन्य कविताएँ उपर्युक्त कविताओं का ही प्रतिनिधित्व करती हैं। कवि धूमिल का प्रस्तुत काव्य-संग्रह में मुख्य स्वर व्यवस्था के प्रति अपना रोष प्रकट करना ही रहा है। प्रस्तुत काव्य-संग्रह के बारे में डॉ. वी. कृष्ण लिखते हैं - "धूमिल की प्रस्तुत संग्रह की कविताएँ भारतीय मेहनतकशों के प्रति चिन्ता को अभिव्यक्त करती हुयी शोषण व्यवस्था पर प्रहार करती है। व्यवस्था के प्रति व्यंग्य और मेहनतकशों की हालत को उनकी कविता अभिव्यक्ति देती हैं।" [१]

१] डॉ. वी. कृष्ण - "क्रांतिदर्शी कवि धूमिल" - पृष्ठ २५।

धूमिल के तीनो प्रकाशित काव्य-संग्रह में - संकलित कविताओं के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि धूमिल की राजनीतिक चेतना प्रखर थी, और वे अपने आस-पास के घटनाओं को बड़ी जागरूक नजर से देखा करते थे। स्वतंत्रता के पश्चात की एक भी ऐसी प्रमुख घटना न होगी जिसे कवि ने अपनी कविता द्वारा प्रकट न किया हो। देश में बढ़ रहे भ्रष्टाचार, हिंसा, आतंक, चुनाव, राजनैतिक हत्याएँ, उजड़ते हुये गाँव इन सब को कवि ने अपना विषय बनाया।

धूमिल ने अपनी कविताओं में राजनीतिक कविताओं के माध्यम से समाज से सीधा सम्बन्ध स्थापित किया। उन्होंने कभी भी किसी एक गुट के साथ अपनी सहानुभूति नहीं रखी, वे तो सभी को अपने साथ ले चलना चाहते थे। डॉ. चमनलाल गुप्ता लिखते हैं - "धूमिल की कविता में किसी एक विचार-धारा अथवा गुट का पक्ष नहीं लिया गया है इसीलिए प्राय: वामपंथी विचारक उनको राजनीतिक समझ को बचकाना घोषित करते हैं।"[1] "संसद से सड़क तक" में राजनीति पर गहरा व्यंग्य, "कल सुनना मुझे" में आशावादी स्वर और "सुदामा पाण्डेय का प्रजातंत्र" में समाज के विभिन्न अंगो का चित्रण साथ ही गहरा आक्रोश दिखायी देता है।

उपर्युक्त तीनों काव्य-संग्रह को देखने के पश्चात यह स्पष्ट हो जाता है कि धूमिल की कविता में स्वातंत्र्योत्तर भारत का सामाजिक राजनीतिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक चित्रण हुआ है। साथ ही अपने युग के हर विषय को धूमिल ने अपने कविता का भी विषय बनाया है।

१] डॉ. चमनलाला गुप्ता - सुदामा पाण्डेय धूमिल के काव्य में यथार्थ-बोध - पृष्ठ ३७।

१.५ निष्कर्ष :-

कहा जाता है कि साहित्य समाज का दर्पण होता है, निसंदेह हमे यह कहना पड़ेगा कि - धूमिल का काव्य उन्होंने खुद भोगी हुयी यातनाओं और साथ ही आस-पास के समाज के विशमताओं और कठोर संघर्षमय यथार्थ जीवन का प्रतिबिंब है। जिस हालत में कविने अपने दिन बिताये जिन कठिनाईयों का उन्हें सामना करना पड़ा उन्हें अपनी तीखी व्यंग्यपूर्ण शैली से उन्होंने पाठकों के सामने रखा। उनके व्यक्तित्व में स्वाभिमान, गरीबों के प्रति हमदर्दी, साहस, स्पष्टतावादीता जैसे गुण मिलते हैं।

परिस्थितिने धूमिल से चाहे लोहा ढोने का काम क्योंन लिया हो लेकिन उस हालत में भी उन्होंने अपने फर्ज को नहीं भूलाया। वे निरंतर साहित्य सेवा में लगे रहे। उनका व्यक्तित्व ही उनकी कविताओं को आकार देता रहा। तभी तो केवल तीन कविता-संग्रह प्रकाशित होने पर भी धूमिल आज हमें समकालीन कवियों में सब से ज्यादा लोकप्रिय दिखायी देते हैं।